संपादक का पत्र

प्रभु की स्तुति हो। अब सिर्फ एक महीना बचा है और 2023 खत्म हो जाएगा. आइए हम इस वर्ष हमें मिले सभी आशीषों पर विचार करें और हर चीज़ के लिए एहसानमंद और आभारी रहें।

यशायाह 54:10 ''चाहे पहाड़ हट जाएँ और पहाड़ियाँ टल जाएँ, तौभी मेरी करुणा तुझ पर से कभी न हटेगी, और मेरी शान्तिदायक वाचा न टलेगी, यहोवा, जो तुझ पर दया करता है, उसका यही वचन है।'' बार–बार परमेश्वर का वचन हमें आश्वासन देता है और वादा करता है कि हमारे अच्छे प्रभु की दया, कृपा और प्रेम हमसे कभी अलग नहीं होंगे। दाऊद हमें याद दिलाता रहता हैं कि, *'धन्य है वह व्यक्ति जो प्रभु पर विश्वास करता है, वह कभी निराश नहीं होगा।'* प्रभु का अपार प्रेम जो कल भी विश्वासयोग्य था, आज भी विश्वासयोग्य है और सदैव विश्वासयोग्य रहेगा!

यिर्मयाह ने दोहराया है, **यिर्मयाह 17:7** में **''धन्य है वह पुरुष जो यहोवा पर भरोसा रखता है, जिसने परमेश्वर को अपना आधार माना हो।''** यिर्मयाह किसे 'धन्य' कहता है? वह नहीं जो सोचता है कि सब कुछ उसके नियंत्रण में है। वह नहीं जो दुनिया की दौलत पर भरोसा रखता हो। परमेश्वर का वचन बहुत स्पष्ट रूप से उन लोगों को 'धन्य' मानता है जो प्रभु में भरोसा करते हैं और विश्वास रखते हैं।

2 कुरिन्थियों 1:4 ''वह हमारे सब क्लेशों में शान्ति देता है; ताकि हम उस शान्ति के कारण जो परमेश्वर हमें देता है, उन्हें भी शान्ति दे सकें जो किसी प्रकार के क्लेश में हों।'' जब हम अपने प्रभु परमेश्वर पर अंधा विश्वास करते हैं तो वह हमें क्या आशीष देते है? वह हमें शांति का आशीष देते है। 'शांति' जो कोई मनुष्य नहीं दे सकता, 'शांति' जिसे कोई मनुष्य हमसे छीन नहीं सकता, और 'शांति' जो शाश्वत है। हमें अपने परिवार, दोस्तों और दुनिया के लोगों से जो शांति मिलती है वह नित्य है। लोग बदलते हैं, परिस्थितियाँ बदलती हैं, और यदि हमारी शांति और ख़ुशी उन पर और दुनिया की चीज़ों पर निर्भर करती है, तो हम कभी भी शांति से नहीं रह सकते। बुद्धिमान सुलैमान ने कहा, "व्यर्थ ही व्यर्थ, सब व्यर्थ है।" इसलिए, किसी अस्थायी

चीज़ पर अपना भरोसा और विश्वास बनाए रखने के बजाय, हमें अपने दिल, दिमाग और आत्माओं को किसी ऐसी चीज़ पर भरोसा करने और आशा करने के लिए प्रशिक्षित करना चाहिए जो स्थायी है, अर्थात्, जीवित परमेश्वर, यीशु का प्यार; क्योंकि जो उस पर भरोसा रखते हैं, वे कभी लज्जित न होंगे। **रोमियों 10:11** कहता है, **''क्योंकि पवित्रशास्त्र यह कहता है, "जो कोई उस पर विश्वास करेगा वह लज्जित न होगा।''**

इसलिए, प्रिय भाइयों और बहनों, क्योंकि प्रभु ने हमें इस अद्भुत जीवन का आशीष दिया है, आइए हम अपनी यात्रा का अधिकतम लाभ उठाएँ। अपने जीवन को सार्थक बनाने और इसे प्रभु और उनके राज्य के लिए कुछ उपयोगी बनाने का निर्णय लें, चाहे हम कहीं भी, कभी भी और जैसे भी कर सकें!

जब तक दुबारा मिलें,

पास्टर सरोजा म।

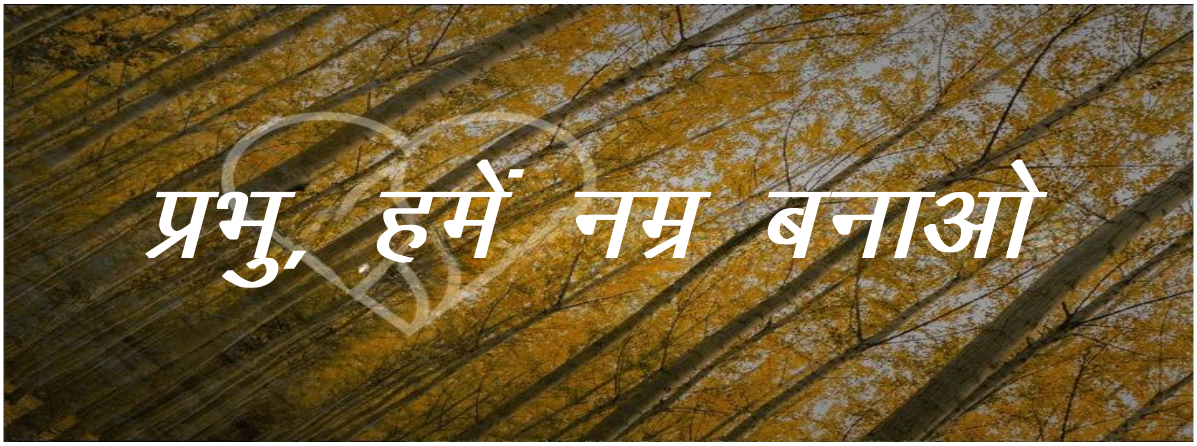

भजन संहिता 37:9 ''क्योंकि कुकर्मी लोग काट डाले जाएँगे; और जो यहोवा की बाट जोहते हैं, वे पृथ्वी के अधिकारी होंगे।'' वचन कहता है कि जो लोग प्रभु में विश्वास करते हैं और उनकी प्रतीक्षा करते हैं वे पृथ्वी के अधिकारी होंगे।

दानिय्येल 7:18 ''परन्तु परमप्रधान के पवित्र लोग राज्य को पाएँगे, और युगानयुग उसके अधिकारी बने रहेंगे।'' दानिय्येल का कहना है कि परमप्रधान के पवित्र लोग राज्य प्राप्त करेंगे और हमेशा के लिए प्रभु के राज्य के अधिकारी होंगे।

शाऊल के बाद दाऊद राजा बना। हालाँकि शाऊल को इस्राएल का राजा नियुक्त किया गया था, लेकिन दाऊद को राज्य विरासत में मिला। शाऊल सदैव दाऊद के पीछे रहता था, और वह लगातार उसे मार डालने का प्रयत्न करता था। एक दिन जब शाऊल की मृत्यु हो गई, तो दाऊद को इस्राएल का राज्य विरासत में मिला और उसे राजा का ताज पहनाया गया।

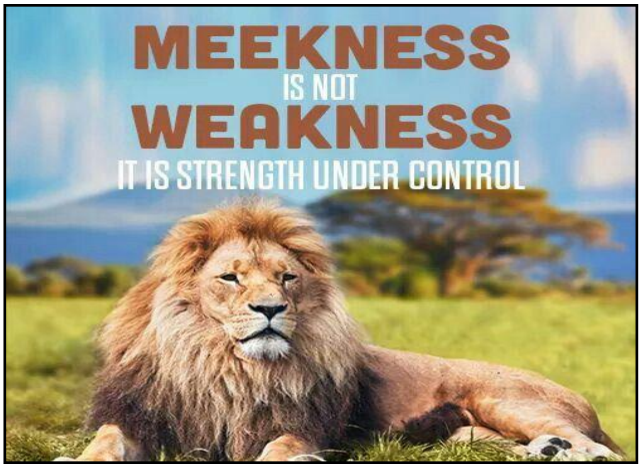

यीशु मसीह पहला प्रचार पर्वत पर था **मत्ती 5:5 में ''धन्य हैं वे, जो नम्र हैं, क्योंकि वे पृथ्वी के अधिकारी होंगे।''**

दाऊद एक पराक्रमी और शूरवीर पुरुष था। वह शाऊल से लड़ सकता था और उसे पकड़ सकता था, और इस प्रकार बलपूर्वक इस्राएल को विरासत में प्राप्त कर सकता था। लेकिन दाऊद ने ऐसा नहीं किया. हालाँकि शाऊल ने उसे मारने की कोशिश की, दाऊद नम्र था, और उसने खुद को प्रभु के हाथों में सौंप दिया। उसने अपने जीवन में प्रभु के समय की प्रतीक्षा की।

वह जानता था कि प्रभु एक दिन उसकी समस्या का न्याय करेंगे। **भजन संहिता 37:9 ''क्योंकि कुकर्मी लोग काट डाले जाएँगे; और जो यहोवा की बाट जोहते हैं, वे पृथ्वी के अधिकारी होंगे।''**

हमने दानिय्येल में पढ़ा है कि जो लोग परमप्रधान परमेश्वर पर भरोसा रखते हैं, वे परमेश्वर के राज्य में हमेशा–हमेशा के लिए शासन करेंगे। हमने दाऊद का जीवन भी देखा है; जब शाऊल ने उसका पीछा करने और उसे सताने की कोशिश की, तो दाऊद नम्र बना रहा और धैर्यपूर्वक परमेश्वर की प्रतीक्षा करता रहा। वह जानता था कि शाऊल जब भी संभव हो उसे मारने के लिए भाला रखता था। तौभी दाऊद अपने नियत समय तक पवित्र की छाया में नम्रता से रहा। हमने यीशु मसीह की पहले प्रचार को भी पढ़ा है, जिसमें उन्होंने कहा था, *'धन्य हैं वे जो नम्र हैं, क्योंकि वे पृथ्वी के अधिकारी होंगे।'* दाऊद ने प्रभु को पीड़ा नहीं दी, उसने धैर्यपूर्वक उनकी प्रतीक्षा की और खुद को प्रभु के हाथों में सौंप दिया। यहां तक कि हमारे जीवन में भी, हमें सभी क्रोध, ईर्ष्या और झगड़ों को त्यागने की जरूरत है, और हमें धैर्यपूर्वक प्रभु की प्रतीक्षा करनी चाहिए; तभी हम पृथ्वी के अधिकारी होंगे। **दानिय्येल 7:27 ''तब राज्य और प्रभुता और धरती पर के राज्य की महिमा, परमप्रधान ही की प्रजा अर्थात् उसके पवित्र लोगों को दी जाएगी, उसका राज्य सदा का राज्य है, और सब प्रभुता करनेवाले उसके अधीन होंगे और उसकी आज्ञा मानेंगे।''** जब हम अपना जीवन प्रभु के हाथों में सौंप देते हैं, तो हमें उनका राज्य विरासत में दिया जाएगा, और सारा राज्य उनकी सेवा और आज्ञापालन करेगा। हमें हमेशा नम्र रहना चाहिए और धैर्य के साथ उनकी प्रतीक्षा करते हुए खुद को प्रभु के हाथों में सौंप देना चाहिए।

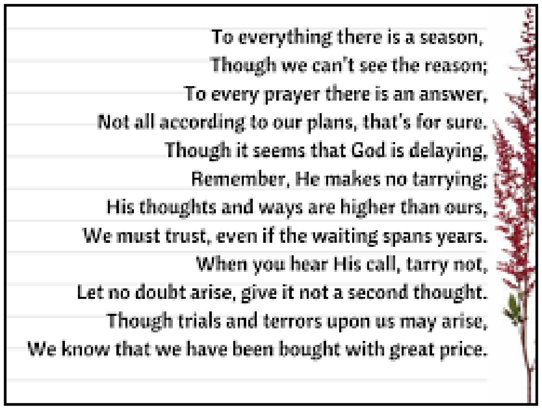

क्या कारण है कि पिता परमेश्वर ने अपने इकलौते पुत्र यीशु मसीह को इस संसार में भेजा? ताकि तुम और मैं, पृथ्वी के अधिकारी हो सकें। यह हमारे लिए परमेश्वर का प्रेम है कि उन्होंने अपने पुत्र यीशु मसीह को इस संसार में भेजा। **मत्ती 1:21 ''वह पुत्र जनेगी और तू उसका नाम यीशु रखना, क्योंकि वह अपने लोगों का उनके पापों से उद्धार करेगा।''** प्रभु ने हमें हमारे पापों और बंधनों से मुक्ति दिलाने के लिए अपने इकलौते पुत्र यीशु को इस दुनिया में भेजा। वह इस दुनिया में आए, हमारे पापों को क्रूस पर ले लिए और हमें अनंत जीवन देने के लिए अपने जीवन का बलिदान दिया। याद रखें, प्रभु ने हमें हमारे पापों से मुक्ति दिलाने और क्रूस पर अपने जीवन का बलिदान देकर हमारे प्रति अपना प्यार दिखाने के लिए अपने पुत्र

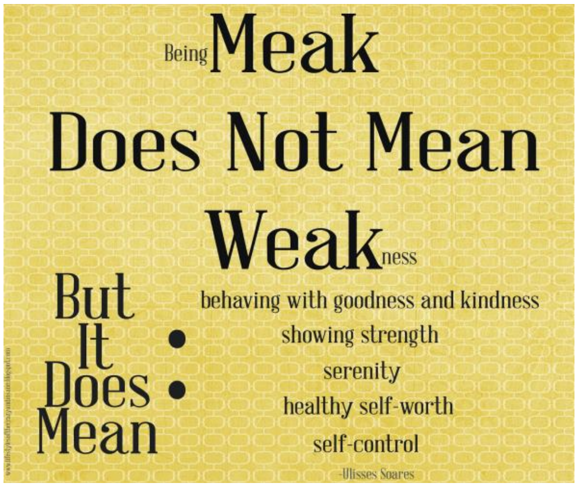

यीशु मसीह को भेजा। **1 तीमुथियुस 2:6 ''जिसने अपने आप को सब के छुटकारे के दाम में दे दिया, और उसकी गवाही ठीक समय पर दी गई।''** यीशु ने सारी मानवजाति के पापों के छुटकारे के रूप में अपना जीवन दे दिया ताकि सारी मानवजाति अपने पापों से छुटकारा पा सके और उनके प्रेम को जान सके।

पतरस ने कहा, **1 पतरस 2:24 में ''वह आप ही हमारे पापों को अपनी देह पर लिये हुए क्रूस पर चढ़ गया, जिससे हम पापों के लिये मरकर धार्मिकता के लिये जीवन बिताएँ : उसी के मार खाने से तुम चंगे हुए।''** यीशु ने पापियों और बंधन में पड़े लोगों के लिए मरकर स्वयं हमारे पापों को अपने शरीर पर ले लिया। उन्होंने हमारे कष्टों को अपने ऊपर लेकर कष्ट सहा और हमें हमारे सभी पापों से मुक्ति दिलाई। जो लोग इस प्रेम और बलिदान को जानते हैं और उस पर विश्वास करते हैं, वे आज भी उनके कोड़े खाने से चंगे हो जाते हैं और ठीक हो जाते हैं। प्रभु उन लोगों पर अपना प्रेम दिखाते है जो उन पर विश्वास करते हैं और उनके सामने नम्र रहते हैं। दुष्ट लोग इस पृथ्वी से काट दिए जाएँगे, जबकि परमेश्वर के बच्चे इस पृथ्वी के अधिकारी होंगे। परमेश्वर जब चाहे इस संसार में दुष्ट लोगों के लिए अपना नियम बदल सकते है। लेकिन जो लोग धैर्य के साथ उनकी प्रतीक्षा करते हैं, प्रभु उन्हें इस पृथ्वी पर सभी पापों और बंधनों से मुक्ति दिलाएंगे। वह हमारे सभी कष्टों और दण्डों को अपने ऊपर ले लेते है और हमें इस पृथ्वी का उत्तराधिकारी बनाते है! प्रभु यीशु 2000 साल पहले धरती पर आये थे, लेकिन उनकी मृत्यु और क्रूस पर बलिदान केवल उस समय के लोगों के लिए नहीं था। यह सत्य आज भी कायम है, और उनके हाथ इतने छोटे नहीं हुए हैं कि वह अब भी हमें कालकोठरी से बाहर नहीं निकाल सकते। हमारी समस्याएँ कुछ भी हों, हमारा दर्द और दुःख कुछ भी हो, हमारा संघर्ष कुछ भी हो, यदि हम प्रभु में विश्वास करते हैं, तो हम पृथ्वी के किसी भी कोने में हों, उनके हाथ छोटे नहीं हैं कि वह हम तक नहीं पहुँच सकते, न ही उसके कान कमज़ोर है कि वह हमारी बात सुन नहीं सकते। **यशायाह 59:1 ''सुनो, यहोवा का हाथ ऐसा छोटा नहीं हो गया कि उद्धार न कर सके, न वह ऐसा बहिरा हो गया है कि सुन न सके;''**

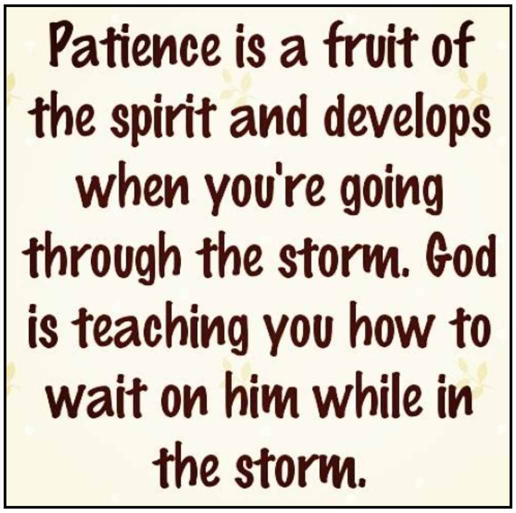

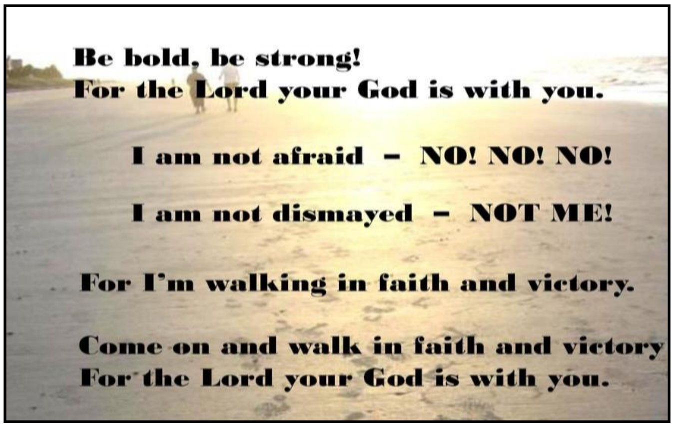

हम में से जो लोग प्रभु की प्रतीक्षा करते हैं, जिनका ध्यान उन पर केंद्रित है, चाहे हम कहीं भी हों, प्रभु बहिरे नहीं है कि वह हमारी पुकार नहीं सुन सकते। उनकी नजरें हमेशा अपने बच्चों पर टिकी रहती हैं. विशेष रूप से परेशानी, दर्द और दुःख के समय में, जब हम उन्हें पुकारते हैं, तो वह हमारे सबसे करीब होते है, और वह हमें हमारे सभी दर्द और दुःख से बचाएंगे।

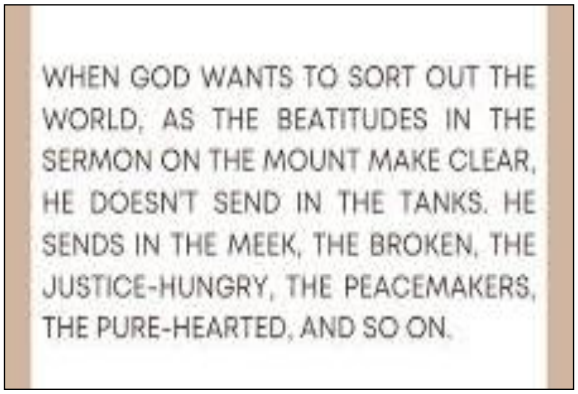

हमें परमेश्वर की प्रतीक्षा करनी चाहिए, जैसे दाऊद ने उनकी प्रतीक्षा की थी। यद्यपि शाऊल लगातार उसे मारने की कोशिश कर रहा था, दाऊद ने परमेश्वर के समय का इंतजार किया, और राज्य को विरासत में मिला, और इस्राएल के सभी प्रांतों पर शासन किया। हमें कभी भी बुरे काम करने वालों पर क्रोध नहीं करना चाहिए क्योंकि वे इस दुनिया में एक अलग रास्ते से आते हैं। हम जानते हैं कि इस संसार में नम्र लोगों को इस संसार के दुष्ट लोग उपहास करते हैं और उन्हें बुरा कहते हैं। फिर भी, हमें इन लोगों की परवाह और चिंता नहीं करनी चाहिए। हमें नम्र बनना चाहिए और इस धरती की बुराई का जवाब देने के लिए प्रभु के समय की प्रतीक्षा करनी चाहिए। केवल जब हम प्रभु परमेश्वर से जुड़ जाते हैं तभी हम इस संसार में विजयी हो सकते हैं!

1 थिस्सलुनीकियों 4:3 "क्योंकि परमेश्वर की इच्छा यह है कि तुम पवित्र बनो : अर्थात् व्यभिचार से बचे रहो," व्यभिचार से दूर रहो और अपने आप को प्रभु के लिए पवित्र रखो, क्योंकि यही उनकी इच्छा है। जो लोग परमेश्वर के वचन की सच्चाई को नहीं जानते, वे इस दुनिया में यह बुराई कर सकते हैं, लेकिन आप और मैं जो परमेश्वर के वचन की सच्चाई जानते हैं, उन्हें व्यभिचार से दूर रहकर, प्रभु के लिए पवित्र रहना चाहिए। हम जो विश्वास करते हैं कि प्रभु इस दुनिया में आए और हमारे पापों और बंधनों के लिए क्रूस उठाया, और इस तरह हमारे लिए

अपना जीवन दिया; हमें स्वयं को इस संसार में व्यभिचार से दूर रखना चाहिए। इस संसार के लोग सत्य को नहीं जानते, क्योंकि वे परमेश्वर के इस रहस्य को नहीं जानते। जब हम इस संसार की चीज़ों से दूर रहेंगे और अपने आप को प्रभु के लिए पवित्र रखेंगे तो वे हमें बुरा कहेंगे। लेकिन हमें उनसे परेशान नहीं होना चाहिए और खुद को उनसे अलग कर लेना चाहिए। हम शुरुआत में इस दुनिया की रचना के बारे में जानते हैं, और कैसे प्रभु ने प्रकाश को अंधेरे से अलग किया। वह जानते थे कि प्रकाश अच्छा था। हमें यह सत्य अवश्य याद रखना चाहिए कि एक बार जब 'सुसमाचार' हमारे जीवन में आ जाएगा, तो प्रभु की रोशनी हमारे जीवन में चमक उठेगी। दुष्ट लोगों ने अभी तक 'सुसमाचार' नहीं सुना होगा, इसलिए वे

परमेश्वर की सच्चाई को नहीं जान पाएंगे। हम जो सत्य को जानते हैं उन्हें अपने जीवन को अंधकार से अलग करना चाहिए क्योंकि अंधकार में हमारा कोई हिस्सा नहीं है।

2 कुरिन्थियों 6:14–15 ''अविश्वासियों के साथ असमान जूए में न जुतो, क्योंकि धार्मिकता और अधर्म का क्या मेल–जोल? या ज्योति और अन्धकार की क्या संगति? और मसीह का बलियाल के साथ क्या लगाव? या विश्वासी के साथ अविश्वासी का क्या नाता?'' शुरू से ही, प्रभु की इच्छा थी कि प्रकाश और अंधकार को अलग किया जाना चाहिए। जिस क्षण हमें प्रभु का सुसमाचार प्राप्त होता है, हमने अपने जीवन में प्रभु का प्रकाश प्राप्त कर लिया है। उसके बाद, हमें अविश्वासियों के साथ मिलकर नहीं रहना चाहिए, क्योंकि हमें अधर्म और अव्यवस्था के लोगों के साथ संगति नहीं रखनी चाहिए। प्रकाश का अन्धकार से क्या सम्बन्ध है? हमें अधर्म और अंधकार से दूर होना चाहिए। **2 कुरिन्थियों 6:17 ''इसलिये प्रभु कहता है, "उनके बीच में से निकलो और अलग रहो; और अशुद्ध वस्तु को मत छूओ, तो मैं तुम्हें ग्रहण करूँगा;''** इस पृथ्वी से अधर्म का नाश हो जाएगा और धर्मी इस पृथ्वी के अधिकारी होंगे। परमेश्वर का वचन कहता है कि *जो लोग धैर्यपूर्वक परमेश्वर की प्रतीक्षा करते हैं वे धन्य होंगे और इस पृथ्वी के अधिकारी होंगे*। आरंभ से ही, परमेश्वर ने अच्छे को बुरे से, प्रकाश को अंधकार से, और धर्मी को अधर्मी से अलग किया है। जो लोग प्रभु में विश्वास करते हैं और उनके नियम में विश्वास करते हैं उन्हें खुद को इस दुनिया से अलग कर लेना चाहिए। एक बार फिर याद रखें, हमारा प्रभु कोई पक्षपाती प्रभु नहीं है। वह हमारे चेहरों को नहीं देखेंगे और हमारा न्याय नहीं करेंगे, बल्कि जब वह इस दुनिया का न्याय करने आएंगे तो वह हमारे दिलों को जाचेंगे। वचन कहता है कि *परमेश्वर अच्छी और बुरी फसलों को एक साथ उगने की अनुमति देते है। फसल के समय, परमेश्वर खराब फसल को काटकर आग में डाल देंगे, जबकि अच्छी फसल को अपने साथ ले जाएंगे*। इसलिए, हमें इस दिन के लिए अपना जीवन बचाना चाहिए, और उसके भय और प्रेम में जीना चाहिए। हर दिन परमेश्वर के वचन के माध्यम से, वह हमें इन सभी शिक्षाओं और हमारे लिए क्रूस पर उनके बलिदान की याद दिलाते है।

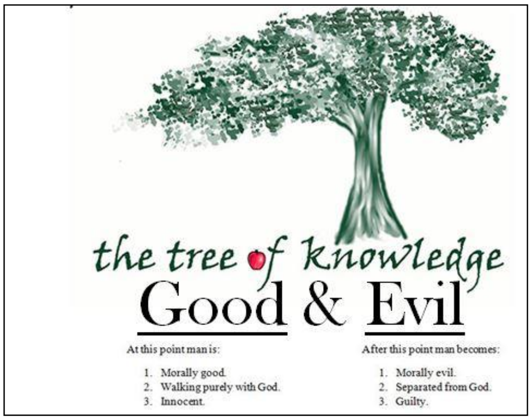

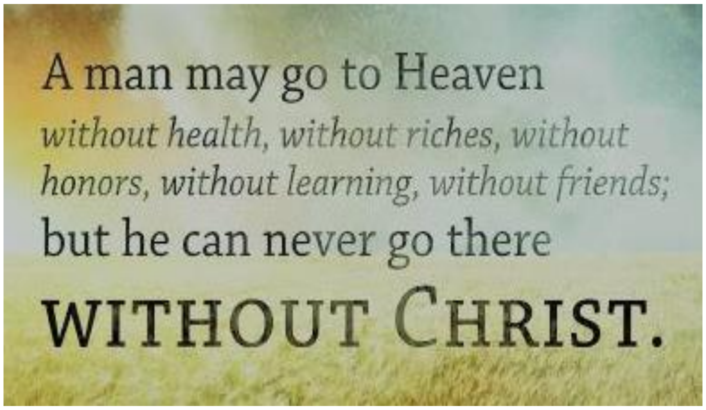

मत्ती 7:21 ''"जो मुझ से, 'हे प्रभु! हे प्रभु!' कहता है, उनमें से हर एक स्वर्ग के राज्य में प्रवेश न करेगा, परन्तु वही जो मेरे स्वर्गीय पिता की इच्छा पर चलता है।'' इस पृथ्वी पर हमारे लिए

परमेश्वर की क्या इच्छा है? कि, उनके बेटे और बेटियों के रूप में, हमें इस धरती का उत्तराधिकार प्राप्त करना चाहिए। प्रभु हमसे इतना प्यार करते हैं कि उन्होंने अपने इकलौते बेटे को धरती पर भेजा ताकि हम इस दुनिया में नष्ट न हो जाएं। प्रभु की इच्छा है कि इस पृथ्वी पर हर एक आत्मा को बचाया जाए और नष्ट न किया जाए। इसलिए, मानव जाति के प्रति अपने प्रेम के लिए, हमारे पिता परमेश्वर ने एक पल के लिए अपनी आँखें बंद कर लीं, जब यीशु, उनका एकमात्र पुत्र क्रूस पर मर रहे थे। इस प्रकार उनके पुत्र के बलिदान के द्वारा ही समस्त मानवजाति को बचाया जा सका।

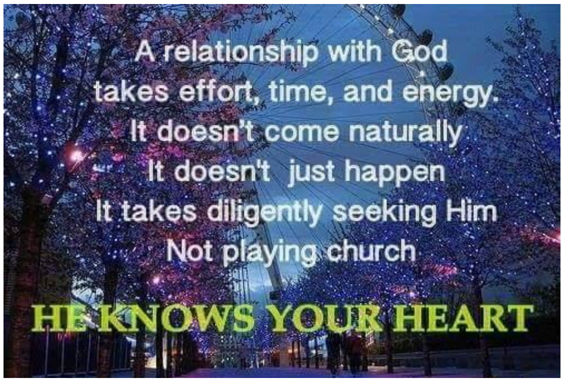

यीशु की मृत्यु से, हम सभी अपने पापों से मुक्त हो गए हैं, और हम इस दुनिया में खुद को अधर्म से अलग कर सकते हैं। हमारा विश्वास और भरोसा केवल प्रभु पर होना चाहिए। वह चाहते है कि केवल उनके नाम पर विश्वास करते हुए बहुत से लोग इस पृथ्वी पर एकत्रित हों। यीशु कहते हैं, *'तुम मेरे बलिदान के कारण नहीं, बल्कि पिता परमेश्वर के प्रेम के कारण बचाए गए हो। उन्होंने तुम्हें तुम्हारे पापों से बचाने के लिए मुझे इस दुनिया में भेजा है। इसलिए, पहले मेरे पिता परमेश्वर को पुकारो, और उनके माध्यम से, मैं तुम्हारी प्रार्थनाओं का उत्तर दूंगा। क्योंकि यदि मेरे पिता ने मुझे न भेजा होता, तो संसार न जानता कि मैं कौन हूं।'* हमारे पिता परमेश्वर ने पहिले हम से प्रेम किया; इसलिए उन्होंने अपने इकलौते पुत्र यीशु मसीह को इस दुनिया में भेजा।

क्रूस पर भी, जब यीशु ने सारी मानव जाति के लिए कष्ट उठाया, तो हमारे पिता परमेश्वर ने एक पल के लिए अपनी आँखें बंद कर लीं, ताकि हमारे पापों के लिए यीशु को क्रूस पर बलिदान किया जा सके। उस बलिदान के कारण, आज हमारे पास अनन्त जीवन है। यीशु मसीह के जन्म से पहले भी, नबी यशायाह ने लिखा था, *'प्रभु के हाथ इतने छोटे नहीं हो गए हैं कि वह तुम्हे बचा नहीं सकते।'* दानिय्येल ने भी भविष्यवाणी की, *'जो लोग प्रभु में विश्वास करते हैं, वे पृथ्वी के उत्तराधिकारी होंगे।'*

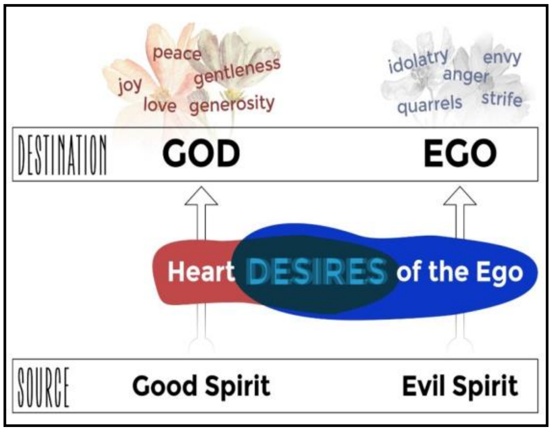

दाऊद ने लिखा, *'जो लोग प्रभु की प्रतीक्षा करते हैं वे पृथ्वी के अधिकारी होंगे और बुरे काम करने वाले इस पृथ्वी से मिटा दिए जाएंगे।'* इन सभी भविष्यवक्ताओं ने इस पृथ्वी पर यीशु मसीह के जन्म से पहले ही भविष्यवाणी की थी। हमारे लिए यह जानना बहुत महत्वपूर्ण है कि धर्मी और अधर्मी एक साथ नहीं रह सकते, और प्रकाश और अंधकार एक साथ नहीं रह सकते। हमारा प्रभु परमेश्वर शाश्वत प्रकाश है, और एक बार जब यह प्रकाश हमारे जीवन को छू लेता है, तो हम

अलग–अलग व्यक्ति बन जाते हैं, और हमारे जीवन में अंधकार के लिए कोई जगह नहीं हो सकती है।

इस संसार में तीन इच्छाएँ हैं 1) हमारी अपनी इच्छा, 2) शैतान की इच्छा, और 3) प्रभु की इच्छा। हमारी इच्छा सोचती है कि हम सब कुछ अपने आप ही हासिल कर सकते हैं, और हमें प्रभु की सलाह की आवश्यकता नहीं है। हम इस दुनिया में चीजें हासिल करने के लिए अपनी बुद्धि और ज्ञान का उपयोग करते हैं। शत्रु की इच्छाएँ उन लोगों के जीवन में देखी जाती हैं जिन्होंने अपनी इच्छाओं को शैतान के हाथों में सौंप दिया है, और उनका जीवन पूरी तरह से शत्रु द्वारा नियंत्रित होता है। दूसरी ओर, परमेश्वर की इच्छाएँ केवल परमेश्वर की इच्छा से पूरी होती हैं, और हमें सब कुछ परमेश्वर के चरणों में लाना चाहिए और अपने जीवन में उनकी इच्छा और योजना के अनुसार काम करना चाहिए। हमारी इच्छाएँ सदैव अपने जीवन में परमेश्वर की इच्छाओं को पूरा करने की होनी चाहिए।

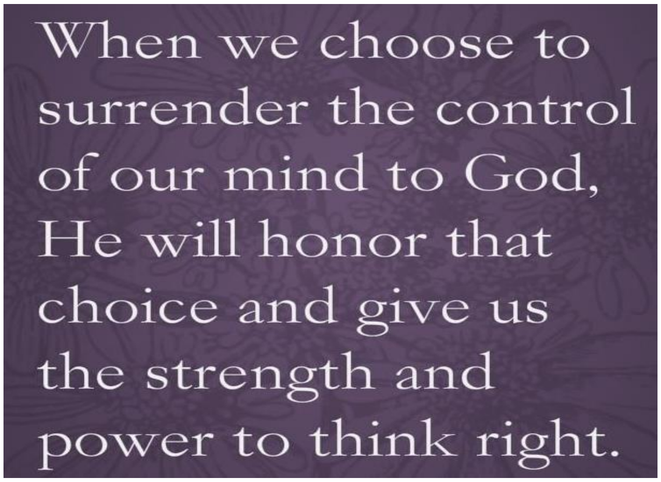

प्रेरितों 9:6 ''परन्तु अब उठकर नगर में जा, और जो तुझे करना है वह तुझ से कहा जाएगा।'' शाऊल के पौलुस बनने से पहले, उसने परमेश्वर की संतानों पर अत्याचार किया। उपरोक्त वचन में, हम शाऊल को कांपते और आश्चर्य के साथ प्रभु से पूछते हुए देखते हैं, *'आप मुझसे क्या चाहते हैं?'* एक बार प्रभु की रोशनी ने शाऊल को अंधा कर दिया, इससे उस पर भय आ गया। उसने प्रभु से सलाह मांगी कि प्रभु उससे क्या करवाना चाहते है। यह हम सभी पर लागू होता है, और इससे पहले कि प्रभु का हाथ हम पर पड़े, हमें प्रभु से हमारे जीवन में उनकी इच्छा पूछनी चाहिए। हमारा प्रभु हमारे जीवन में हर दिन हमें रास्ता दिखाने के लिए है। उनका दर्शाया हुआ ही मार्ग, सत्य और जीवन है।

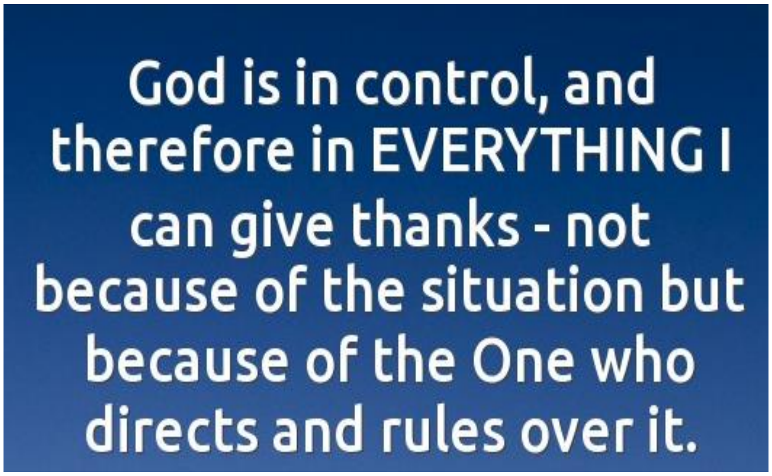

भजन संहिता 32:8 ''मैं तुझे बुद्धि दूँगा, और जिस मार्ग में तुझे चलना होगा उस में तेरी अगुवाई करूँगा; मैं तुझ पर कृपादृष्टि रखूँगा और सम्मति दिया करूँगा।'' हमें अपने जीवन में सदैव प्रभु की इच्छा को जानना चाहिए। कभी भी अपनी इच्छानुसार कुछ भी न करें, क्योंकि आप कभी सफल नहीं होंगे। एक बार जब प्रभु की कृपा का हाथ हम पर से हट गया, तो हम बर्बाद हो जायेंगे। प्रभु कहते

हैं, 'मैं तुम्हें वैसे ही सिखाऊंगा जैसे तुम्हें चलना चाहिए, और समय–समय पर मैं अपनी आंखों से तुम्हारा मार्गदर्शन करूंगा।' नम्र और विनम्र बने रहें, और हमेशा प्रभु के चरणों में बैठें और उनसे इस दुनिया में हमारा मार्गदर्शन करने के लिए कहें। तभी हम अपने हर काम में सफल होंगे। हमारे भीतरी विचार और कार्य आंतरिक रूप से बुरे हैं; इसलिए हमें अपनी इच्छा और इच्छाओं को एक तरफ रखना चाहिए और प्रभु की इच्छा और योजना के लिए उनकी प्रतीक्षा करनी चाहिए। तब हम अपने हर काम में सफल होंगे।

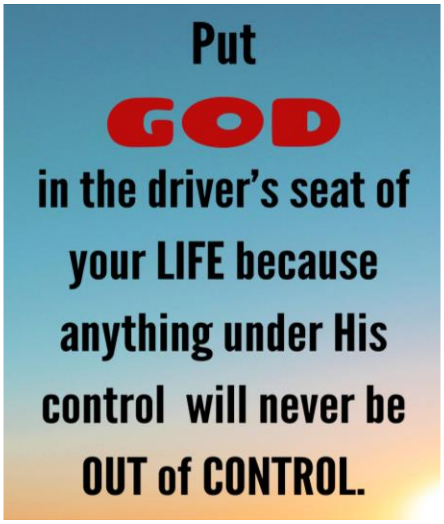

परमेश्वर के बलिदान के लिए उनकी निरंतर स्तुति और आराधना करें। हमारे जीवन में उनके सभी अद्‌भुद कार्यों और बहुतायत से आशीष के लिए प्रभु को धन्यवाद दें। **1 थिस्सलुनीकियों 5:18 "हर बात में धन्यवाद करो; क्योंकि तुम्हारे लिये मसीह यीशु में परमेश्वर की यही इच्छा है।"** हर चीज़ में हमें प्रभु को धन्यवाद देना चाहिए, क्योंकि यही हमारे लिए उनकी इच्छा है। जब हम प्रभु के प्रेम और हमारे लिए उनके बलिदान को भूल जाते हैं, तो वह हमें इस पृथ्वी से अलग कर देंगे। प्रत्येक दिन, चाहे अच्छा हो या बुरा, और हर स्थिति में, हमें अपने जीवन में प्रभु की सभी अच्छाइयों, दया, दयालुता और कृपा के लिए उनकी स्तुति और धन्यवाद करना चाहिए। **भजन संहिता 34:1 "(दाऊद का भजन, जब वह अबीमेलेक के सामने पागलदृसा बना, और अबीमेलेक ने उसे निकाल दिया, और वह चला गया) मैं हर समय यहोवा को धन्य कहा करूँगा; उसकी स्तुति निरन्तर मेरे मुख से होती रहेगी।"** दाऊद के जीवन में, जब वह एक युवा चरवाहा लड़का था, और उसके बाद एक राजा था, हर समय प्रभु उसके जीवन में सबसे महत्वपूर्ण रहे। उसका विश्वास और भरोसा सदैव प्रभु में था और उसने अपना जीवन प्रभु के हाथों में सौंप दिया। दाऊद ने हर चीज़ के लिए

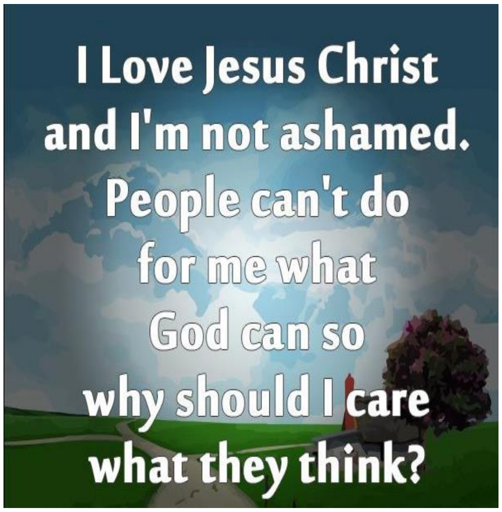

लगातार परमेश्वर की स्तुति की और उन्हें धन्यवाद दिया। जब दाऊद राजा बना, तो वह परमेश्वर के सन्दूक को यरूशलेम वापस ले आया। उसने अपनी पूरी शक्ति से प्रभु के सामने नृत्य किया, बिना इसकी परवाह किये कि उसके कपड़े गिर गये। वह नंगा नाचता रहा, और उसकी पत्नी मीकल ने यह देखा। **2 शमूएल 6:13–22 "जब यहोवा का सन्दूक उठानेवाले छः कदम चल चुके, तब दाऊद ने एक बैल और एक पाला पोसा हुआ बछड़ा बलि कराया। और दाऊद सनी का एपोद कमर में कसे हुए यहोवा के सम्मुख तन मन से नाचता रहा। यों दाऊद और इस्राएल का समस्त घराना यहोवा के सन्दूक को जय जयकार करते और नरसिंगा फूँकते हुए ले चला। जब यहोवा का सन्दूक दाऊदपुर में आ रहा था, तब शाऊल की बेटी मीकल ने खिड़की में से झाँककर दाऊद राजा को यहोवा के**

सम्मुख नाचते कूदते देखा, और उसे मन ही मन तुच्छ जाना। लोग यहोवा का सन्दूक भीतर ले आए, और उसके स्थान में, अर्थात् उस तम्बू में रखा, जो दाऊद ने उसके लिये खड़ा कराया था; और दाऊद ने यहोवा के सम्मुख होमबलि और मेलबलि चढ़ाए। जब दाऊद होमबलि और मेलबलि चढ़ा चुका, तब उसने सेनाओं के यहोवा के नाम से प्रजा को आशीर्वाद दिया। तब उसने समस्त प्रजा को, अर्थात्, क्या स्त्री क्या पुरुष, समस्त इस्राएली भीड़ के लोगों को एक एक रोटी, और एक एक टुकड़ा मांस, और किशमिश की एक एक टिकिया बँटवा दी। तब प्रजा के सब लोग अपने अपने घर चले गए। तब दाऊद अपने घराने को आशीर्वाद देने के लिये लौटा, और शाऊल की बेटी मीकल दाऊद से मिलने को निकली, और कहने लगी, "आज इस्राएल का राजा जब अपना शरीर अपने कर्मचारियों की दासियों के सामने ऐसा उघाड़े हुए था, जैसा कोई निकम्मा अपना तन उघाड़े रहता है, तब क्या ही प्रतापी देख पड़ता था!" दाऊद ने मीकल से कहा, "यहोवा, जिसने तेरे पिता और उसके समस्त घराने के बदले मुझ को चुनकर अपनी प्रजा इस्राएल का प्रधान होने को ठहरा दिया है, उसके सम्मुख मैं ऐसा नाचा—और मैं यहोवा के सम्मुख इसी प्रकार नाचा करूँगा। और मैं इससे भी अधिक तुच्छ बनूँगा, और अपनी दृष्टि में नीच ठहरूँगा; और जिन दासियों की तू ने चर्चा की वे भी मेरा आदरमान करेंगी।"

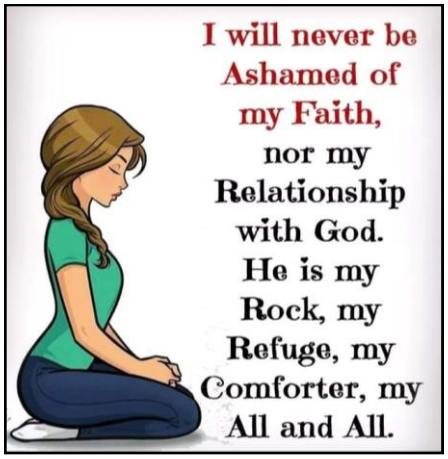

दाऊद ने अपने जीवन में प्रभु की भलाई को याद किया और प्रभु के सामने बहुत खुशी और तन मन के साथ नाचता रहाा। जब उसकी पत्नी मीकल ने उसका उपहास किया, तब दाऊद ने उत्तर दिया, कि वह अपनी दृष्टि में इससे भी अधिक तुच्छ बनूँगा, और उसकी दासियां भी उसका आदर करेंगी।

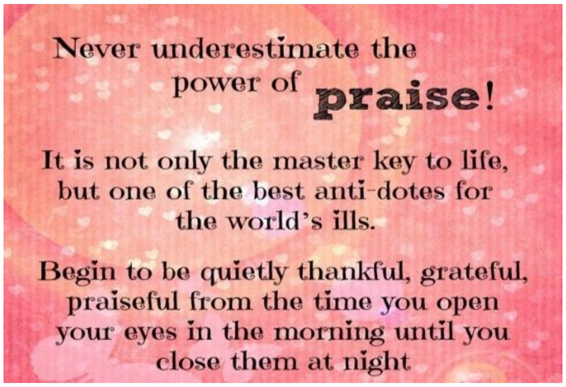

जब हम अपने जीवन में प्रभु के महान कार्यों को याद करते हैं, तो हमारा हृदय उनके प्रति आभार और धन्यवाद से भर जाएगा। दाऊद ने प्रभु परमेश्वर के लिए अपनी पूरी शक्ति और उत्साह के साथ नृत्य किया। भजन संहिता 139:14 "मैं तेरा धन्यवाद करूँगा, इसलिये कि मैं भयानक और अद्भुत रीति से रचा गया हूँ। तेरे काम तो आश्चर्य के हैं, और मैं इसे भली भाँति जानता हूँ।" हमारी आत्मा को प्रभु की महानता और अच्छाई को पहचानना चाहिए।

भजन संहिता 63:3–4 "क्योंकि तेरी करुणा जीवन से भी उत्तम है, मैं तेरी प्रशंसा करूँगा। इसी प्रकार मैं जीवन भर तुझे धन्य कहता रहूँगा; और तेरा नाम लेकर अपने हाथ उठाऊँगा।"

भजन संहिता 48:1 ''हमारे परमेश्वर के नगर में, और अपने पवित्र पर्वत पर यहोवा महान् और अति स्तुति के योग्य है!''

प्रभु की स्तुति और धन्यवाद करने में कभी संकोच न करें। जब हम आत्म– जाग्रत होंगे, तो हम परमेश्वर की स्तुति और महिमा नहीं करेंगे। हमारी स्तुति और महिमा, जब सच्चे दिल से की जाती है तो प्रभु के स्वर्गीय सिंहासन तक पहुंचती है और उनके राज्य में एक मीठी सुगंध होती है।

जब परमेश्वर हमें लेने आएंगे, तो कल्पना कीजिए कि हममें से जो पीछे रह जाएंगे उनके लिए हम कितने दुखी होंगे। हमारी दुर्दशा की कल्पना कीजिए जब परमेश्वर हमें काट देते हैं और जलने के लिए आग में फेंक देते हैं। वह दिन कितना दुःखदायी होगा!

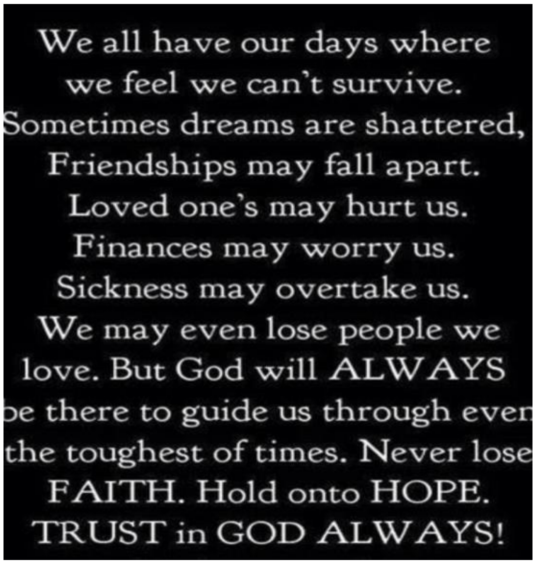

जब प्रभु हमें लेने आएंगे, तो कल्पना कीजिए कि हममें से जो पीछे रह जाएंगे उनके लिए हम कितने दुखी होंगे। हमारी दुर्दशा की कल्पना कीजिए जब प्रभु हमें अलग कर देंगे और जलने के लिए आग में फेंक देंगे। वह दिन कितना दुःखदायी होगा!

सभोपदेशक 8:11 ''बुद्धिमान के तुल्य कौन है? और किसी बात का अर्थ कौन लगा सकता है? मनुष्य की बुद्धि के कारण उसका मुख चमकता, और उसके मुख की कठोरता दूर हो जाती है।'' क्योंकि परमेश्वर का न्याय हम पर तुरंत नहीं आता, हम जीवन को हल्के में लेते हैं। परमेश्वर का वचन सत्य और जीवन है। **प्रकाशितवाक्य 5:9–10 ''वे यह नया गीत गाने लगे, "तू इस पुस्तक के लेने, और इसकी मुहरें खोलने के योग्य है; क्योंकि तूने वध होकर अपने लहू से हर एक कुल और भाषा और लोग और जाति में से परमेश्वर के लिये लोगों को मोल लिया है, और उन्हें हमारे परमेश्वर के लिये एक राज्य और याजक बनाया; और वे पृथ्वी पर राज्य करते हैं।''** चार प्राणी और चौबीस प्राचीन मेमने के सामने गिर पड़े और प्रभु के लिए एक नया गीत गाया क्योंकि उन्होंने उन्हें इस पृथ्वी पर प्रभुत्व दिया था। प्रभु की इच्छा है कि मनुष्य हर समय उनकी स्तुति करता रहे।

दाऊद ने भजन संहिता 103:2 में कहा, **''हे मेरे मन, यहोवा को धन्य कह, और उसके किसी उपकार को न भूलना।''**

हमारी आत्मा को निरंतर प्रभु की स्तुति करनी चाहिए। हमें अपने जीवन में उन उपकारों को कभी नहीं भूलना चाहिए जो प्रभु ने हमें दिए हैं।

मैं प्रार्थना करती हूं कि यह संदेश हममें से प्रत्येक के लिए आशीष हो!

पास्टर सरोजा म।